जगद्गुरुश्रीनरहर्यानन्दाचार्यप्रणीतं

नाम–प्रताप

नमि सियपति सियऔ हनुमाना। ब्रह्मा वशिष्ठादि सह माना।।
वन्दि जगद्गुरु रामानन्दा। जो त्रय भाष्य रचे आनन्दा।।1।।

गुरु अनन्त पद उरमें धारै। नरहरि नाम-प्रताप उचारै।।

श्रुति पुराण जामें सब साखी। नृप से शुकमुनि बाणी भाखी।।2।।

कीन्हें अन्त नरक का वर्णन। सुनि भयभीत भया नृपका मन।।

घोर नरक-यातना बखानी। सो सब भूप आप महँ मानी।।3।।

भीति व्याधि चित-शान्ति गँवाई। सद्य वैद्य शुक कीन दवाई।।

अतिप्राचीन कहे इतिहासा। जैसे होय नृपति-विश्वासा।।4।।

कान्यकुब्ज द्विज भया विकारी। वेश्यारत मदमांस-अहारी।।

धर्मलेश स्वपने नहिं जाना। विषय-भोग पुरुषारथ माना।।5।।

करत कुकर्म न पीछे देखा। मानव-जन्म विषयहित लेखा।।

दूतन कहँ यम आयसु दीना। जिमि यम कहा तथा तिन कीना।।6।।

मुगदर मारि पाश गल डारा। नारायण सुत-नाम उचारा।।

सुनि हरि किंकर दौडे आये। को तुम हरिका दास दुखाये।।7।।

नाम हमारे प्रभु का लीना। ताहि दण्ड केहि कारण दीना।।

यह सुनि धर्मराज के अनुचर। नीति दिखाय दिये शुभ उत्तर।।8।।

हमारे नृपति न्याय पहिचानैं। गुण औ अवगुण सबके जानैं।।

चित्र विचित्र जासु अगवानी। नाहिं पक्षपाती अभिमानी।।9।।

क्षीर नीरका विवरण करहीं। साखि उगाहि दंड पुनि धरहीं।।

यम-किंकर जिन मनुजन लूटैं। ते पापी पापन से छूटैं।।10।।

यहि से अजामील पै आये। लै जाबै यम वेगि बुलाये।।

कहे परस्पर बहुतक बचना। अपने ठकुरसुहाती रचना।।11।।

तब हरि सेवक किए प्रहारा। अजामीलका किए उबारा।।

यम-अनुचर तब जाय पुकारे। मुगदर पाश तहाँ पर डारे।।12।।

कानि न मानै कोउ तुम्हारी। देखहु काहेन पीठ हमारी।।

अजामील कहँ तुम बोलवाये। हमहिं मारि कोउ ताहि छुड़ाये।।13।।

नारायण सुत नामहि भाखा। तबहू पक्षपात करि राखा।।

को जानै काके वे अनुचर। माला मुद्रा ऊर्ध्वपुण्ड्र-धर।।14।।

यमराजा कह भूलि बिगारी। हमहि उलहनो मिलिहै भारी।।

व्यर्थ मारि तुम काहे खाये।। नाम सुनत किमि नहिं छिटकाये।।15।।

तुम हरि-जनसे कीन लड़ाई। आपद् बहुत हमहु पै आई।।

हम उनके अधिकारी नाहीं। अकुतोभय विचरैं जगमाहीं।।16।।

ऐसा जग हरिजन-व्यवहारा। पद्म-पत्र जैसे जलन्यारा।।

हरि उनकी करते रखवारी। मृत्यु भीति नहिं और हमारी।।17।।

भूलेहु चितवहु उनकी ओरा। तौ आपन करि राखेहु ठौरा।।

दूत कहे पहले समझाते। तो इतनी मारहि किमि खाते।।18।।

तब यम कहे कि भेद सुनावैं। द्वादश बिन कोउ जानि न पावैं।।

अज शङ्कर नारद कुमार मुनि। मनु प्रह्लाद जनक भीष्म पुनि।।19।।

कपिल व्यास बलि मोहीं गनिहैं। गोप्य धर्म काहुहि नहिं भणिहैं।।

नाम अतुल बल कहत न पारा। सहजहि भवसागर निस्तारा।।20।।

नाम हास्य संकेतहु करही। जल-मल शरद् सदृश अघ हरही।।

लित पतित दुःखित रोगातुर। परवश आपद्ग्रस्त क्षुधातुर।।21।।

रसना राम कबहुँ जो आवै। यम-यातना कबहुँ नहिं पावै।।

यद्यपि जग-द्रोही होवे नर। नाम सुनत पावन सब अघ-हर।।22।।

जो नृप-सुत होवै अन्याई। रैयत दंड दियो नहिं जाई।।

की बात भूप भल जानै। अपनेहि रोष वाद मन आनै।।23।।

ऐसे हैं हरि-नाम लेवैया। दंड योग्य नाहिन ते भैया।।

सीख हमारि मानि यह लीजै। हरि-जन देखत बन्दन कीजै।।24।।

शुकमुनि यह वृत्तान्त कहा हित। सुनि सन्देह भया नृपके चित।।

भूप तहाँ पै शंका कीनी। नाममात्र कैसे गति दीनी।।25।।

पाप-प्रक्रिया बहुत बताई। बहुत भाँति तुम निज मुख गाई।।
धन अल्प कहे तुम स्वामी। सुत हित नाम तरा किमि कामी।।26।।
स्मृति श्रुति साधन जो बतराये। तिनते पाप न जाहिं नशाये।।
मदिरा-गागरि गंग नहावै। तेहि दुर्गन्ध दुगुनही आवै।।27।।
जैसे दव तृन बाहर जरई। चातुरमास चौगुना फरई।।
वर्षाकाल कुम्भ-जल जैसे। क्षोभ भये कर्दम हो तैसे।।28।।
कुञ्जर-शौच नाम बिन साधन। जरि नहि जरै सकल अपराधन।।
सुरा-विन्दु ब्रह्मत्वहिं खोवै। अचरज कहा नाम अघ धोवै।।29।।
लरिका हेत बजावैं तारी। उड़ैं काग डर उपजै भारी।।
सिंह-स्वभाव विपिनमहँ गाजैं। सुनि गज-यूथ मदोन्मत भाजैं।।30।।
तिमि हरिनामहिं सुनत सुतहुके। भागत पाप न रहत नरहुके।।
अग्नि अमृत गुण कबहुं न निघटै। वस्तु-स्वभाव अवश्यहि प्रकटै।।31।।
जैसे बकहिं न मेढक खाई। ऐसे भक्त न यमवश भाई।।
यहि विधि नाम प्रतापहिं जानो। संशय जिनि नृप मन में आनो।।32।।
विप्र बड़ा प्रायश्चित कीना। अगला पिछला अघ हरि लीना।।
यह निर्णय अगस्त्य से पावा। करि करुणा मुनिराज सुनावा।।33।।
व्यास-पुत्र इतिहास बखाना। भरतर्षभ-सन्देह नशाना।।
नाम सकल साधन का राजा। केवल जप मख सरइ न काजा।।34।।
साधन सबहि नामबल सांचे। नाम बिना सब साधन कांचे।।
और युगन बहु विधि व्यवहारा। कलि केवल हरिनाम अधारा।।35।।
सकृत् नाम जो बदन उचारै। आप तरै अरु औरहिं तारै।।
भवपाथोधि नाम नौका दृढि। अगणित पतित पार भे तेहि चढि।।36।।
नाम-प्रताप बरनि को सकही। शिव विरंचि श्रवणन कर धरहीं।।
मन मेरे सिख सुनले भाई। नाम हृदयते जिनि विसराई।।37।।

नाम बिना साधना न पूरी। नाम सन्तकी जीवन-मूरी।।
जानि अजानि नाम उच्चरिहैं। जन्म जन्म तेहि कष्ट न परिहैं।।38।।
नाम परम श्रुति मङ्गलकारी। सुनत दिव्य अध्वर-अधिकारी।।
श्वपच पवित्र नाम मुख जाके। धर्म नामबल करतब ताके।।39।।
सुकृती पाप कोउ तनुधारी। नामरटनके सब अधिकारी।।
नाम कल्पपादप चिन्तामनि। अन्तर्भूत सबै रिधि सिधि पुनि।।40।।
निष्कण्टक निर्विघ्न राज-पथ। नाम छांडि नाहीं पुरुषारथ।।
विधि निषेध बल गाये शङ्कर। जानहु सकल नामके किंकर।।41।।
भगवन्ननाम स्वल्पही उचरै। वीतशोक सब लोकन विचरै।।
रामनाम जेतो अघ हरई। कलि जन तेतो करि नहिं सकई।।42।।
धन्य धन्य सोई बड़ भागी। रसना रामनाम रसपागी।।
जप तप पूजन मन्त्र विहीने। सब परिपूर्ण नामके लीने।।43।।
योग याग व्रत तीरथ साधन। दीप दान औ अमराराधन।।
जितने सुकृत पुराणन गाये। नाम-अर्ध सम सबन बताये।।44।।
नाम सेत भवसागर माहीं। नाम लेत भव-भीति नशाहीं।।
उत्तम नाम रूपते राखा। नाटक प्रकट कपीश्वर भाखा।।45।।
सो शुभ लगन सुदिन मंगलकर। रसना रटती जब सीतावर।।
भाषैं नाम सुकृत सुहृदय नर। मोक्ष गमन बांधैं दृढ़ परिकर।।46।।
हरिका नाम भारती जाके। तीरथ रूप वदन हैं ताके।।
कम्पन दुरत तुटत ममता जर। नाम प्रभाव फटै यम-कागर।।47।।
धाता का उपहार दिव्य अति। रघुवर नाम मनोहर नर-गति।।
मङ्गलवर सीतावर-नामा। नाम कहत नर पूरणकामा।।48।।
नाशि अभद्र भद्रका दानी। रामनाम बस जाकी बानी।।
नाम-प्रताप जो सुनै सुनावैं। सो सुख भक्ति मुक्ति पद पावैं।।49।।
नामहिं जानै निज सुखदाता। नामहिको मानै निज-त्राता।।
आन उपायनकी नहिं आशा। नरहरिदास नाम विश्वासा।।50।।